बहुत समय पहले की बात है।

दो चोर थे। हिम्मत सिंह और शेरसिंह। दोनों बहुत चतुर थे। एक दिन वे चोरी का विचार करते हुए कहीं जा रहे थे। रास्ते में उन्हें एक किसान मिला। वह खेत में हल चला रहा था। दोनों चोर किसान के पास गए। उन्होंने किसान से कहा, "भाई, हम मुसाफिर हैं थके हैं। भूखे हैं, हमें कुछ भोजन करा दो। इसके बदले में हम आपका काम कर देंगे।" यह सुनकर किसान बोला, "मैं घर जाकर आपके लिएभ ोजनल ाताहूँ।ज ाबत ाकअ ापख ोतप ारक ामक रें।"ट ाहक हकर किसान अपने घर चला गया। दोनों चोर खेत से हल, बक्खर की रस्सी एवं पाँस निकालकर भाग गए।

आगे चलते हुए उन्हें एक चरवाहा मिला। वह बकरियाँ चरा रहा था। चोरों ने उससे भी वही कहा, "भाई, हमें भूख लगी है हमें भोजन करा दो। हम अपकी बकरियाँ चराएँगे।" चरवाहा मान गया। वह बोला, "ठीक है! मैं घर से तुम्हारे लिए भोजन ले आता हूँ।" यह कहकर वह चला गया। चोरों ने बकरी के दो छोटे बच्चे उठाए और रफूचक्कर हो गए।

आगे रास्ते में उन्हें एक किसान मिला। वह अपने खेत की सिंचाई कर रहा था। वे दोनों उसके पास पहुँचे। वे किसान से बोले, "भाई, हम मुसाफिर हैं, हमें भोजन करा दो।" किसान बोला, "आप यहीं रुको, मैं अभी घर से भोजन लेकर आता हूँ।" यह कहकर किसान घर चला गया। चोरों ने सिंचाई वाला नाड़ा (बड़ी रस्सी) और कुएँ से पानी निकालने वाला रस्सा समेटा और रफूचक्कर हो गए।

कुछ दूर चलने पर उन्हें एक गाँव दिखाई दिया। वे उस गाँव में पहुँचे। वहाँ उन्हें एक अम्मा मिली। अम्मा ने चोरों से कहा, "भैया, यहाँ क्यों आए हो? यह राक्षसों का गाँव है।" चोर बोले, "अच्छा तो हमें कहीं छुपने का स्थान बता दो।" अम्मा ने उन चोरों को घर में छुपने को कहा।

रात होते ही राक्षस उस घर में पहुँचे। राक्षस बोले, "हमें भोजन दो भोजन!" उसी समय बकरी का बच्चा चिल्लाया। बकरी की आवाज़ सुनकर राक्षस बोले, "कौन है?" चोर बोले, "हम राक्षस के बाप राक्षस हैं।" राक्षस बोला, "कौन राक्षस?" चोर बोले, "हम तुम्हें अपनी शक्ति दिखाते हैं। ये हमारे बाल हैं।" कहकर चोर मोटी रस्सी फेंकते हैं। रस्सी देखकर राक्षस सोचते हैं कि इतने बड़े बाल? इतने में दोनों चोर कहते हैं, "अब हमारे सिर की जुएँ देखो।" यह कहकर वे बकरी के बच्चे फेंक देते हैं। बकरी के बच्चों की मैं-मैं की आवाज़ सुनकर राक्षस घबरा जाते हैं। चोर बक्खर की पाँस फेंककर कहते हैं, "देखो, ज़रा हमारे दाँत भी देखो।"

पाँस से राक्षस घायल हो जाते हैं। वे वहाँ से सिर पर पाँव रखकर भाग जाते हैं। चोर उसी गाँव में रहने लगते हैं। वहाँ का सारा धन चोरों का हो जाता है।

*यह कहानी "कहानियों के अण्डे" गतिविधि के तहत **बलदेव कुमरे** से प्राप्त हुई है।*

चित्र : प्रिया कुरियन